

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/5/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. दुनिया का सबसे बड़ा अधम –

हाँ, हाँ, दुनिया का सबसे बड़ा अधम नर वही था
जिसकी ज़बान से यह निकला था पहले-पहल –

भूमि यह मेरी है !

“भूमि यह मेरी है ?”

झूठा, मक्कार था !

असत्य, अन्याय का अवतार था !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !!

नीचे की धरती और ऊपर का आसमान,

पानी और पवन –

प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए,

इन पर है सबका अधिकार;

सबका समान अधिकार

हवा को क्या बाँटोगे ?

पानी को बाँटोगे ?

बाँटोगे नीले आसमान को ?

बाँट भी सकोगे क्या ?

धरती बेचारी बेबस थी –

पैरों के नीचे

अचल पड़ी थी, निरीह;

कह दिया –

“भूमि यह मेरी है” –

बाँट लिया टुकड़ों में,

एक मुट्ठी लोगों ने,

मानो माता के आँचल को दाँतों से चीरकर

बाँट लिया कुछ शैतान बच्चों ने;

टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़

रोती रही दुखिया बेचारी माँ !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !

[8 अंक]

1(i). इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्राकृतिक संसाधनों का सृजन
- (B) भूमि का वैज्ञानिक वितरण
- (C) भूमि पर सबका समान अधिकार
- (D) भूमि के इतिहास का वर्णन

सही उत्तर: (C) भूमि पर सबका समान अधिकार

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव वह विचार है जो पूरे काव्यांश को एक सूत्र में बाँधता है। यहाँ भूमि सहित प्राकृतिक संपदा पर समान अधिकार का समर्थन किया गया है।

- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ पहचानें कवि कहता है कि धरती, आकाश, पानी और पवन प्रकृति की देन हैं तथा उन पर सबका समान अधिकार है। भूमि को कुछ लोगों द्वारा टुकड़ों में बाँटने की निंदा इसी विचार को पुष्ट करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें विकल्प (A) में संसाधनों के सृजन की बात है, जबकि कविता उनके अधिकार की चर्चा करती है। (B) में वैज्ञानिक वितरण और (D) में भूमि का इतिहास है; इनका वर्णन यहाँ नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश का केंद्रीय भाव भूमि पर सबका समान अधिकार है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय बार-बार उभरने वाले विचार को देखें; यहाँ निर्णायक शब्द हैं—सबका समान अधिकार।

1(ii). “प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए” इस पंक्ति से कवि का अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) व्यक्तिगत अधिकार
- (B) जातीय विभाजन
- (C) धार्मिक आस्था
- (D) सामूहिक स्वामित्व

सही उत्तर: (D) सामूहिक स्वामित्व

हल:

अवधारणा:

- किसी पंक्ति का आशय उसके निकटवर्ती कथन और पूरे काव्यांश के विचार से स्पष्ट होता है। जीवमात्र शब्द सभी जीवों को समाहित करता है।
- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ समझें धरती, आकाश, पानी और पवन को कवि किसी एक व्यक्ति या समूह की बनाई हुई वस्तु नहीं मानता। ये प्रकृति से मिले हैं और सभी जीवों के उपयोग के लिए हैं; इसलिए इन पर सबका समान अधिकार है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (A) व्यक्तिगत अधिकार इस व्यापक अधिकार को सीमित करता है। (B) जातीय विभाजन सबकी समानता के विरुद्ध है। (C) धार्मिक आस्था का उल्लेख पंक्ति में नहीं है। (D) सामूहिक स्वामित्व सबके अधिकार का भाव व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का अभिप्राय सामूहिक स्वामित्व है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: जीवमात्र जैसे व्यापक शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति, जाति या धर्म तक सीमित करके न चुनें।

1(iii). “माता के आँचल को दाँतों से चीरना” इस पंक्ति का आज के संदर्भ में सटीक अर्थ क्या है ?

[1 अंक]

- (A) जैविक खेती को प्रोत्साहन
- (B) वनों की अंधाधुंध कटाई
- (C) हरित ऊर्जा का विकास
- (D) जल संरक्षण योजनाएँ

सही उत्तर: (B) वनों की अंधाधुंध कटाई

हल:

अवधारणा:

- कवि धरती को माँ और उसका विभाजन करने वालों को निर्दयी बच्चों के रूप में चित्रित करता है। इस बिंब में प्रकृति के प्रति हिंसा तथा स्वार्थपूर्ण दोहन का विरोध है।
- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: बिंब का भाव स्पष्ट करें माता के आँचल को दाँतों से चीरना मातृरूपा धरती को अपने स्वार्थ के लिए क्षति पहुँचाने का संकेत है। आज के संदर्भ में वनों की अंधाधुंध कटाई प्रकृति के इसी निर्दय विनाश का उदाहरण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का अंतर समझें जैविक खेती (A), हरित ऊर्जा का विकास (C) और जल संरक्षण योजनाएँ (D) प्रकृति की रक्षा में सहायक हैं। इनमें चीरने की क्रूरता और विनाश का भाव नहीं मिलता। इसलिए दिए गए विकल्पों में वनों की अंधाधुंध कटाई ही उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B), वनों की अंधाधुंध कटाई है।

त्वरित सुझाव: बिंब के आज के अर्थ में वही गतिविधि चुनें जो उसके मूल भाव—प्रकृति को स्वार्थवश क्षति—से मेल खाती हो।

1(iv). यदि ‘भूमि यह मेरी है’ की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना कैसी होगी ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न कविता में निजी कब्जे के विरोध और समान अधिकार के समर्थन से एक संभावित समाज की कल्पना करने को कहता है। उत्तर का आधार काव्यांश का समानता का विचार है।
- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: स्वामित्व की भावना का परिणाम समझें कविता में भूमि को अपनी कहने से थोड़े लोगों का कब्जा और अन्य लोगों की वंचना पैदा होती है। इस स्वार्थपूर्ण भावना के अभाव में भूमि पर सबका समान अधिकार स्वीकार किया जाएगा।

चरण 2: संभावित समाज की संरचना बताएँ दुनिया अधिक समानतापूर्ण और न्यायपूर्ण होगी। प्राकृतिक संसाधनों पर कुछ लोगों का एकाधिकार नहीं होगा तथा लोग साझेदारी और पारस्परिक सहयोग के साथ रह सकेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष ऐसी दुनिया में भूमि पर सबका समान अधिकार होगा और समाज की संरचना समानता, सहयोग तथा न्याय पर आधारित होगी।

त्वरित सुझाव: काल्पनिक परिणाम लिखते समय कविता के मूल विचार को उलटकर देखें—एकाधिकार हटने पर समान अधिकार सामने आता है।

1(v). 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' किसे कहा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसी व्यक्ति का नैतिक मूल्यांकन उसके कर्म और समाज पर उस कर्म के प्रभाव के आधार पर किया गया है। अधम का अर्थ अत्यंत नीच आचरण वाला है।
- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: किसे कहा गया है, पहचानें जिस व्यक्ति ने सबसे पहले भूमि पर अपना निजी अधिकार जताते हुए कहा कि यह भूमि उसकी है, उसे कवि ने दुनिया का सबसे बड़ा अधम कहा है। यहाँ निंदा उस स्वार्थपूर्ण अधिकार-दावे की है जो प्रकृति की साझा देन को किसी एक की संपत्ति बनाता है।

चरण 2: कवि की निंदा का कारण स्पष्ट करें भूमि प्रकृति की देन है और उस पर सभी जीवों का समान अधिकार है। उसे अपनी बताने वाले ने इस समान अधिकार को नकारकर असत्य और अन्याय की शुरुआत की। आगे कुछ मुट्ठीभर लोगों ने धरती के टुकड़े बाँट लिए और दूसरे लोग देखते रह गए। कवि इसे माँ के आँचल को निर्दयता से चीरने जैसा कर्म बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष सबसे पहले भूमि को अपनी कहने वाला व्यक्ति अधम है, क्योंकि उसने सबकी साझा प्राकृतिक देन पर निजी कब्जे का दावा करके समान अधिकार का हनन और अन्याय किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखें—पहले व्यक्ति की पहचान, फिर प्रकृति की साझा देन और समान अधिकार के आधार पर कारण।

1(vi). 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़' पंक्ति में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य केवल अन्याय करने वाले को नहीं, उसे चुपचाप सहने वाले के व्यवहार को भी निशाना बना सकता है। यहाँ शरीफ़ शब्द के साथ निष्क्रिय देखने की मुद्रा इसी विरोध को उजागर करती है।
- उत्तर के लिए दिए गए काव्यांश की पंक्तियों, संदर्भ और भाव का परस्पर संबंध देखा जाता है।

चरण 1: व्यंग्य का लक्ष्य पहचानें इस पंक्ति में उन तथाकथित शरीफ़ और सज्जन लोगों पर व्यंग्य है जो भूमि के अन्यायपूर्ण बाँटवारे को देखते रहे, लेकिन उसका विरोध करने के लिए आगे नहीं आए। कुछ लोगों ने साझा धरती पर अपना अधिकार जमा लिया और वे केवल मूक दर्शक बने रहे।

चरण 2: व्यंग्य का कारण समझाएँ उनकी शराफ़त सक्रिय नैतिक साहस में नहीं बदल सकी। अन्याय को पहचानकर भी चुप रहना अन्यायी लोगों को रोक नहीं सका; परिणामतः धरती का बाँटवारा होता रहा। टुकुर-टुकुर ताकने का प्रयोग उनकी असहाय अथवा निष्क्रिय दर्शकवृत्ति को उभारता है। कवि ऐसे निष्क्रिय सदाचार की सार्थकता पर प्रश्न उठाता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यंग्य उन निष्क्रिय सज्जनों पर है जो भूमि की लूट और अन्याय देखते रहे, पर उसका प्रतिरोध न कर सके। उनकी चुप्पी अन्याय को रोकने में विफल रही।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य के उत्तर में केवल लक्ष्य का नाम न लिखें; उसके आचरण और उस आचरण की कमी को भी स्पष्ट करें।

2. जीवन के लिए जागना जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी सोना है। दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं। नींद का न आना भी एक विकार है, जिससे अनेक प्रकार की बाधाएँ आ सकती हैं और जो प्राणी रात-दिन सोता ही रहे, वह तो निष्क्रिय ही है। यदि दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करती रहें – आदमी जागे कर्म करने के लिए, सोये विश्राम के लिए – तो जीवन सुखी होता है, लेकिन जागना जीवन का मुख्य लक्षण है, सोना अर्थात् – विश्राम, तो केवल उसका सहायक है। इसलिए, जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है और निद्रा पतन तथा हास का। जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है, निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। कम-से-कम सोने के लिए अनेक उपाय और साधन बताए गए हैं। अधिक-से-अधिक सोने के लिए आज तक किसी ने कोई उपाय नहीं बताया – उसी तरह, जैसे स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं, पर बीमारी के लिए भी किसी ने कोई प्रयत्न किया है, ऐसा कभी सुनने में नहीं आया। वास्तव में स्वास्थ्य का न होना ही बीमारी है – उसी तरह, जैसे प्रकाश का न होना ही अंधकार है। आदमी जितना ही कम सोये उतना ही जागरूक है, यहाँ तक कि कई विद्वानों का मत है, सोना कोई आवश्यक क्रिया नहीं। संभव है तपस्वियों के लिए सोना आवश्यक न हो, उनकी प्रकृति में रज और सत ही रह जाता हो, तम की सर्वथा हानि हो जाती हो, पर साधारण प्राणियों के लिए भी यही नियम लागू है कि मात्रा से अधिक सोने में हानि है, अतएव जब हम किसी राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना करते हैं, तो इसका बोध यह होता है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया और उसमें जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम है।

[10 अंक]

2(i). 'जागृति' और 'निद्रा' किन गुणों से संबंधित हैं ?

[1 अंक]

- (A) सत और तम
- (B) रज और सत
- (C) सत और रज
- (D) रज और तम

सही उत्तर: (D) रज और तम

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में जागृति और निद्रा के लिए बताए गए गुणों की पहचान करनी है।
- उत्तर में गुणों का क्रम वही रहना चाहिए जो प्रश्न में अवस्थाओं का है।

चरण 1: जागृति का गुण पहचानें लेखक स्पष्ट करता है कि जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है। इसलिए प्रश्न में पहले स्थान पर रज आएगा। सत को जागृति का गुण बताने वाले विकल्प (A) और (C) इस कथन से मेल नहीं खाते।

चरण 2: निद्रा का गुण पहचानें गद्यांश में निद्रा में तमोगुण की प्रधानता कही गई है। इसलिए दूसरे स्थान पर तम होना चाहिए। विकल्प (B) में दूसरे स्थान पर सत है, इसलिए वह भी गलत है। विकल्प (D) दोनों अवस्थाओं और उनके गुणों का सही क्रम देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जागृति रजोगुण से और निद्रा तमोगुण से संबंधित है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले जागृति के लिए रज और फिर निद्रा के लिए तम लिखकर विकल्पों का क्रम मिलाएँ।

2(ii). गद्यांश के अनुसार सोना अर्थात् निद्रा किसकी सहायक है ?

[1 अंक]

- (A) स्वास्थ्य की
- (B) जागने की
- (C) विश्राम की
- (D) मृत्यु की

सही उत्तर: (B) जागने की

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में मुख्य क्रिया और उसकी सहायक क्रिया का संबंध समझना है।
- विश्राम का उद्देश्य फिर से कर्म करने के योग्य बनाना है।

चरण 1: मुख्य और सहायक क्रिया देखें लेखक जागने को जीवन का मुख्य लक्षण बताता है। सोना अर्थात् विश्राम उसका सहायक है। व्यक्ति कर्म करने के लिए जागता और विश्राम के लिए सोता है; इस प्रकार निद्रा जागने की सहायक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें स्वास्थ्य का उदाहरण बाद में तुलना के लिए आता है, इसलिए (A) इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं है। सोना स्वयं विश्राम है, अतः (C) में बताए अनुसार वह विश्राम की सहायक नहीं है। मृत्यु से उसका कोई ऐसा संबंध गद्यांश में नहीं बताया गया, इसलिए (D) भी गलत है।

चरण 3: निष्कर्ष सोना अर्थात् निद्रा जागने की सहायक है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के “जागना जीवन का मुख्य लक्षण है वाक्य से सहायक क्रिया का संबंध जोड़ें।

2(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : जागना जीवन के लिए आवश्यक है।

कारण : जाग्रत हो ध्यानपूर्वक कर्म करने से ही, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।
- (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँचना आवश्यक है।
- दोनों सही हों तो यह भी देखना है कि कारण कथन की व्याख्या करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की जाँच जागना जीवन के लिए आवश्यक है। गद्यांश में जागने को जीवन का मुख्य लक्षण कहा गया है और कर्म करने के लिए जागने की बात कही गई है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है। जागरूक होकर कर्म करने से उन्नति होती है, जबकि निष्क्रियता ह्रास से जुड़ती है। इसलिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति वाला कारण भी गद्यांश के आशय के अनुसार सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध कारण बताता है कि जागना क्यों आवश्यक है: जागकर ध्यानपूर्वक कर्म करने से उन्नति संभव होती है।

इसलिए (A) और (B) में सत्यता का निर्णय गलत है तथा (D) में व्याख्या के संबंध का निर्णय गलत है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर कर्म और उन्नति को जोड़कर व्याख्या का संबंध पहचानें।

2(iv). 'जागृति' और 'निद्रा' किसके प्रतीक हैं ? गद्यांश के आधार पर बताइए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकार्थ में शब्द का गद्यांश में निहित व्यापक अर्थ बताया जाता है।
- यहाँ जागृति और निद्रा की तुलना सक्रियता तथा निष्क्रियता के संदर्भ में है।

चरण 1: जागृति का प्रतीकार्थ गद्यांश में जागृति को जीवन और अभ्युदय का चिह्न कहा गया है। जागना कर्म करने के लिए है, इसलिए यहाँ इसका संबंध सक्रिय जीवन और उन्नति से है।

चरण 2: निद्रा का प्रतीकार्थ निद्रा को पतन तथा हास का चिह्न बताया गया है। इस प्रतीकार्थ को लेखक के निष्क्रियता और अधिक सोने के संदर्भ में समझना चाहिए। आवश्यक विश्राम की उपयोगिता को गद्यांश आरंभ में स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष जागृति जीवन और अभ्युदय की प्रतीक है, जबकि निद्रा पतन तथा हास की प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पूछे जाने पर गद्यांश के “जीवन और अभ्युदय तथा “पतन तथा हास शब्दों को आधार बनाएँ।

2(v). 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक कैसे हैं ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरक क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करके जीवन का संतुलन बनाए रखती हैं।
- गद्यांश कर्म के लिए जागने और विश्राम के लिए सोने का उद्देश्य बताता है।

चरण 1: दोनों क्रियाओं की भूमिका मनुष्य जागकर कर्म करता है और अपनी जीवनगत गतिविधियाँ पूरी करता है। सोना उसे विश्राम देता है। यह विश्राम जागकर किए जाने वाले कर्म का सहायक है। इसीलिए लेखक दोनों क्रियाओं को एक-दूसरे के सहारे पर मानता है। केवल जागते रहना भी संतुलित जीवन का रूप नहीं है, क्योंकि नींद का न आना गद्यांश में विकार कहा गया है।

चरण 2: संतुलन का महत्त्व दूसरी ओर, रात-दिन सोते रहने वाला प्राणी निष्क्रिय हो जाता है। इसलिए निद्रा का उद्देश्य निरंतर सोते रहना नहीं, कर्मशील जीवन के लिए आवश्यक विश्राम पाना है। जब जागना कर्म में और सोना विश्राम में सहायक होता है, तब दोनों क्रियाएँ अपना उचित कार्य करती हैं। इसी पारस्परिक सहयोग को लेखक सुखी जीवन का आधार मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष जागना कर्म करने के लिए और सोना विश्राम के लिए आवश्यक है। विश्राम कर्मशील जीवन की सहायता करता है; इसलिए दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं और उनका संतुलन जीवन को सुखी बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों उद्देश्यों को साथ लिखें: जागना-कर्म, सोना-विश्राम; फिर उनके सहयोग का परिणाम बताएँ।

2(vi). लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' का क्या तात्पर्य है ? उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र की जागृति का अर्थ गद्यांश के अंतिम वाक्य के प्रसंग में समझना है।
- यहाँ जागृति सामाजिक चेतना और सक्रिय जीवन की कामना का प्रतीक है।

चरण 1: राष्ट्र की स्थिति पहचानें लेखक कहता है कि किसी राष्ट्र की जागृति की कामना का बोध यह है कि वह आवश्यकता से अधिक तमोगुणी हो गया है और उसमें जीवन की मात्रा कम है। यहाँ तमोगुण का संकेत निष्क्रियता की ओर है। इसलिए ऐसी कामना राष्ट्र में सक्रियता और जीवन की कमी देखकर की जाती है, केवल लोगों के शारीरिक रूप से नींद से उठने के लिए नहीं।

चरण 2: जागृति का आशय स्पष्ट करें राष्ट्र की जागृति से आशय उस निष्क्रियता को दूर करके उसमें चेतना, कर्मशीलता और जीवन का संचार करना है। गद्यांश जागृति को जीवन तथा अभ्युदय का चिह्न मानता है, इसलिए राष्ट्र की जागृति की कामना उसकी उन्नति की कामना भी है। इस उत्तर का आधार लेखक का रजोगुण, तमोगुण और सक्रिय जीवन के बीच बनाया गया संबंध है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्र की जागृति का तात्पर्य उसके अत्यधिक तमोगुण और निष्क्रियता को दूर कर उसमें चेतना, कर्मशीलता तथा जीवन का संचार करना है, जिससे वह उन्नति की ओर बढ़ सके।

त्वरित सुझाव: अंतिम वाक्य की दो कमियाँ—अधिक तमोगुण और कम जीवन—पहचानकर उनके दूर होने का आशय लिखें।

2(vii). निद्रा को किस गुण की प्रधानता से जोड़ा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में गुणों का संबंध क्रियाओं की प्रवृत्ति से स्थापित किया गया है।
- निद्रा की तमोगुण-प्रधानता को निष्क्रियता और अधिक सोने के संदर्भ में स्पष्ट करना है।

चरण 1: गुण का उल्लेख करें लेखक का स्पष्ट कथन है कि निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। इसके विपरीत जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है। यह तुलना बताती है कि लेखक जागने को कर्म और सक्रिय जीवन से तथा निद्रा को विश्राम एवं कर्म से विरति की अवस्था से जोड़ रहा है। इसलिए निद्रा का गुण सत या रज बताना गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन के विरुद्ध होगा।

चरण 2: प्रधानता का कारण समझाएँ निद्रा में व्यक्ति कर्म से विरत रहता है और अधिक सोने पर निष्क्रिय हो जाता है। लेखक इसी निष्क्रियता को पतन और ह्रास से जोड़ता है, इसलिए निद्रा में तमोगुण की प्रधानता बताई गई है। फिर भी इस कथन का अर्थ आवश्यक नींद को सर्वथा व्यर्थ कहना नहीं है: गद्यांश के अनुसार विश्राम के लिए सोना जागकर कर्म करने का सहायक है, जबकि हानिकारक स्थिति मात्रा से अधिक सोना है।

चरण 3: निष्कर्ष निद्रा को तमोगुण की प्रधानता से जोड़ा गया है, क्योंकि उसमें कर्मशीलता घटती है और अधिक निद्रा मनुष्य को निष्क्रिय बनाकर पतन तथा ह्रास की ओर ले जाती है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय तमोगुण को निष्क्रियता से जोड़ें और आवश्यक विश्राम तथा अधिक निद्रा का अंतर ध्यान में रखें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है – कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; दृश्य के स्थान पर शब्द और ध्वनि श्रोता तक सूचना पहुँचाते हैं।
- स्वर का उतार-चढ़ाव भाव प्रकट करता है और ध्वनि-प्रभाव वातावरण की अनुभूति कराते हैं।

चरण 1: माध्यम की प्रकृति समझें रेडियो पर श्रोता घटना को देख नहीं सकता। इसलिए सरल, स्पष्ट और बोलचाल के शब्द ही दृश्य का संकेत देते हैं। आवाज़ की गति, विराम और लय कथन का आशय स्पष्ट करते हैं। ध्वनि-प्रभाव किसी स्थान या घटना का वातावरण रचते हैं। उदाहरण के लिए वर्षा की ध्वनि श्रोता को बरसात का अनुभव कराती है। स्पष्ट उच्चारण और उपयुक्त विराम से संदेश पहली बार सुनने पर ही समझ में आ जाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो में दृश्य नहीं होते। शब्द सूचना और चित्रात्मक विवरण देते हैं, स्वर का उतार-चढ़ाव भाव व्यक्त करता है तथा ध्वनि-प्रभाव वातावरण बनाते हैं। इन तीनों के प्रभावी संयोजन से श्रोता अपने मन में घटना का दृश्य रच लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो में शब्द अर्थ, स्वर भाव और ध्वनि वातावरण प्रदान करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शब्द, स्वर और ध्वनि-प्रभाव की अलग-अलग भूमिका अवश्य बताइए।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘एंकर विजुअल’ का क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एंकर समाचार प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति है, जबकि विजुअल संबंधित समाचार का दृश्य होता है।
- दृश्य चलते समय एंकर का विवरण सुनाई देना एंकर विजुअल प्रस्तुति की विशेषता है।

चरण 1: प्रस्तुति का क्रम पहचानें टेलीविजन में समाचार पहले एंकर पढ़ता है। उसके बाद उसी समाचार से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं और उनके साथ एंकर का विवरण सुनाई देता है। इस रूप में समाचार पढ़ने और दृश्य दिखाने का संबंध स्पष्ट रहता है; केवल एंकर का चेहरा दिखाना इसकी पूरी परिभाषा नहीं है। दृश्य समाचार के कथन से जुड़े होने चाहिए, जिससे दर्शक घटना को समझ सके और सूचना प्रभावी बने।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर एंकर विजुअल टेलीविजन समाचार की वह प्रस्तुति है जिसमें एंकर पहले समाचार की सूचना देता है। इसके बाद संबंधित दृश्य पर्दे पर दिखाए जाते हैं और एंकर की आवाज़ में उनका विवरण सुनाई देता है। दृश्य और कथन मिलकर समाचार स्पष्ट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर विजुअल में एंकर के समाचार-वाचन के साथ संबंधित दृश्य प्रस्तुत होते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में समाचार पढ़ते एंकर और उसके साथ दिखते संबंधित दृश्यों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘नेट साउंड’ किसे कहते हैं ? दूरदर्शन के संदर्भ में समझाइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नेट साउंड घटनास्थल पर रिकॉर्ड होने वाली स्वाभाविक ध्वनि है।
- प्राकृतिक ध्वनि समाचार के दृश्यों को जीवंतता और प्रामाणिकता देती है।

चरण 1: ध्वनि का स्रोत समझें नेट साउंड का आशय प्राकृतिक ध्वनि से है। घटनास्थल पर कैमरे के साथ रिकॉर्ड हुई आसपास की वास्तविक आवाजें इसी श्रेणी में आती हैं। यह स्टूडियो में पढ़े गए समाचार या बाद में जोड़े गए संगीत से भिन्न है। इसका उद्देश्य दृश्य का वास्तविक वातावरण दर्शक तक पहुँचाना है। उदाहरण के लिए किसी जुलूस के दृश्य में वहाँ लगे नारे स्वाभाविक ध्वनि हैं। इनकी उपस्थिति दर्शक को घटनास्थल के वातावरण से जोड़ती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर नेट साउंड घटनास्थल की स्वाभाविक ध्वनि को कहते हैं, जो दृश्यों के साथ रिकॉर्ड होती है। दूरदर्शन समाचार में भीड़ का शोर, नारे या वाहनों की आवाज़ इसके उदाहरण हैं। इनसे घटना का वातावरण सजीव होता है और समाचार की प्रामाणिकता बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष नेट साउंड संबंधित घटना के वास्तविक परिवेश की स्वाभाविक आवाज़ है।

त्वरित सुझाव: नेट साउंड समझाते समय घटनास्थल की वास्तविक आवाज़ का उदाहरण दीजिए, पृष्ठभूमि संगीत का नहीं।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

फ़ीचर की लेखन शैली समाचार की लेखन शैली से किस प्रकार भिन्न है ? किन्हीं दो भिन्नताओं का उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार में तथ्यपरकता, संक्षिप्तता और उल्टा पिरामिड शैली का महत्त्व है।
- फ़ीचर रोचक, वर्णनात्मक और रचनात्मक प्रस्तुति से विषय का विस्तार करता है।

चरण 1: दो आधारों पर अंतर करें पहला अंतर संगठन का है: समाचार महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले देता है, जबकि फ़ीचर रोचक आरंभ और विषयानुकूल विस्तार अपना सकता है। दूसरा अंतर भाषा का है: समाचार की भाषा सीधी, संक्षिप्त और तथ्यपरक होती है; फ़ीचर में भावात्मकता, चित्रात्मकता तथा साहित्यिक प्रयोग की अधिक गुंजाइश होती है। तथ्यों की शुद्धता दोनों में आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समाचार में उल्टा पिरामिड शैली अपनाकर सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले रखे जाते हैं; फ़ीचर में रोचक आरंभ और स्वतंत्र क्रम संभव है। समाचार की भाषा सीधी, संक्षिप्त और तथ्यपरक होती है, जबकि फ़ीचर की भाषा वर्णनात्मक, चित्रात्मक और अपेक्षाकृत साहित्यिक हो सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष शैली के दो प्रमुख अंतर प्रस्तुति-क्रम और भाषा के स्वरूप में हैं।

त्वरित सुझाव: दो स्पष्ट आधार चुनिए: पहले प्रस्तुति का क्रम, फिर भाषा का स्वरूप बताइए।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विशेष लेखन के अंतर्गत कौन-सी सामग्री आती है ? उल्लेख कीजिए। समाचार पत्र-पत्रिकाओं के लिए विशेष लेखन का कार्य कौन करता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन सामान्य समाचारों से आगे किसी विशिष्ट क्षेत्र की गहरी जानकारी प्रस्तुत करता है।
- विशेषज्ञता तथा क्षेत्र की शब्दावली की समझ रखने वाले पत्रकार और विषय-विशेषज्ञ यह लेखन करते हैं।

चरण 1: प्रश्न के दोनों पक्ष अलग करें पहले विशेष लेखन की विषयवस्तु बतानी है और फिर उसके लेखक का परिचय देना है। अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और कानून जैसे क्षेत्रों पर समाचार, विश्लेषण, समीक्षा तथा लेख इसमें आते हैं। ऐसे लेखन में संबंधित क्षेत्र की जानकारी आवश्यक है, इसलिए विशेष संवाददाता और विषय-विशेषज्ञ इसकी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर विशेष लेखन में अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा तथा कानून जैसे विशिष्ट क्षेत्रों के समाचार, विश्लेषण, समीक्षाएँ और लेख आते हैं। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के लिए यह कार्य संबंधित क्षेत्र के जानकार विशेष संवाददाता, विशेषज्ञ पत्रकार तथा विषय-विशेषज्ञ करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशिष्ट विषयों की विशेषज्ञतापूर्ण सामग्री विशेष लेखन है; इसे जानकार पत्रकार और विशेषज्ञ लिखते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले सामग्री के क्षेत्र गिनाइए और फिर विशेष संवाददाता तथा विषय-विशेषज्ञ का उल्लेख कीजिए।

4(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्वच्छता : आज की आवश्यकता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा मौलिक दृष्टिकोण, सजीव आरंभ, विचारों का तार्किक क्रम और प्रभावी समापन आवश्यक हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में एक केंद्रीय भाव विकसित करें। शीर्षक विषयानुकूल हो और भाषा सहज, शुद्ध तथा संवेदनशील रहे।

चरण 1: रूप और आरंभ निर्धारित करें किसी परिचित गंदी सड़क या सार्वजनिक स्थान के दृश्य से आरंभ करके स्वच्छता को स्वास्थ्य, नागरिक जिम्मेदारी और दैनिक आदतों से जोड़ें। यह स्वतंत्र रचनात्मक लेख है; इसमें पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं लिखे जाते। उपयुक्त शीर्षक के नीचे सीधे विषय प्रस्तुत करें।

चरण 2: विषयवस्तु का क्रम तय करें समस्या के रूप में कचरा और रोग, उपायों के रूप में कचरे का पृथक्करण तथा साफ-सफाई और समापन में सामूहिक भागीदारी रखें। लेख को केवल नारों की सूची न बनाकर क्रमबद्ध गद्य में विकसित करें। कारण, प्रभाव और उपाय के बीच स्पष्ट संबंध रखें। प्रत्येक वाक्य मुख्य विषय को आगे बढ़ाए और अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 3: पूरा नमूना लेख स्वच्छता : आज की आवश्यकता

सुबह विद्यालय जाते हुए सड़क पर बिखरा कचरा देखकर मन उदास हो जाता है। यही गंदगी मक्खियों और मच्छरों को बढ़ाती है तथा हमारे स्वास्थ्य को संकट में डालती है। स्वच्छता आज केवल सुंदरता का विषय नहीं, स्वस्थ जीवन की आवश्यकता है। घर साफ करके कचरा सड़क पर फेंक देना सफाई नहीं है। हमें गीले और सूखे कचरे को अलग रखना चाहिए, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने से बचना चाहिए और प्लास्टिक का प्रयोग घटाना चाहिए। स्वच्छ जल, साफ शौचालय और नियमित हाथ धोने की आदत अनेक रोगों से बचाती है। प्रशासन की व्यवस्था तभी सफल होगी जब नागरिक भी जिम्मेदारी निभाएँगे। आइए, अपने आसपास की सफाई से शुरुआत करें; छोटा प्रयास पूरे समाज को स्वस्थ और सुंदर बना सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूना लेख विषय को सजीव आरंभ, क्रमबद्ध विचारों तथा सार्थक समापन के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले आरंभ, मुख्य विचार और समापन मन में तय करें; फिर अंतिम बार शब्द-सीमा तथा विषय से संबंध जाँचें।

4(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

प्रकृति से टूटता नाता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा मौलिक दृष्टिकोण, सजीव आरंभ, विचारों का तार्किक क्रम और प्रभावी समापन आवश्यक हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में एक केंद्रीय भाव विकसित करें। शीर्षक विषयानुकूल हो और भाषा सहज, शुद्ध तथा संवेदनशील रहे।

चरण 1: रूप और आरंभ निर्धारित करें प्रकृति से निकटता और वर्तमान जीवन की दूरी का कोई सहज दृश्य लें। फिर दूरी के कारणों, जीवन पर प्रभावों और संबंध पुनः बनाने के व्यावहारिक तरीकों को जोड़ें। यह स्वतंत्र रचनात्मक लेख है; इसमें पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं लिखे जाते। उपयुक्त शीर्षक के नीचे सीधे विषय प्रस्तुत करें।

चरण 2: विषयवस्तु का क्रम तय करें प्रारंभ में चिड़ियों और मोबाइल का विरोधी दृश्य, मध्य में शहरीकरण तथा प्रदूषण के प्रभाव और अंत में पौधों की देखभाल व जल-संरक्षण का संदेश रखें। व्यक्तिगत अनुभव को व्यापक सामाजिक प्रश्न से जोड़ना रचना को प्रभावी बनाता है। कारण, प्रभाव और उपाय के बीच स्पष्ट संबंध रखें। प्रत्येक वाक्य मुख्य विषय को आगे बढ़ाए और अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 3: पूरा नमूना लेख प्रकृति से टूटता नाता

कभी सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से खुलती थी, आज मोबाइल की घंटी हमें जगाती है। ऊँची इमारतों और व्यस्त दिनचर्या के बीच हमारा प्रकृति से नाता कमजोर पड़ रहा है। बच्चे पेड़ों की पहचान पुस्तकों में करते हैं, पर उनकी छाँव में खेल नहीं पाते। सुविधाओं की दौड़ में हमने जंगल काटे, नदियाँ दूषित कीं और खुली जगहों को कंक्रीट से ढक दिया। इसका परिणाम बढ़ती गर्मी, प्रदूषण और मानसिक थकान के रूप में सामने है। प्रकृति से जुड़ने के लिए बड़े अभियानों की प्रतीक्षा आवश्यक नहीं। पौधे लगाना, उनकी देखभाल करना, पानी बचाना और प्रतिदिन कुछ समय खुले आकाश के नीचे बिताना भी सार्थक शुरुआत है। प्रकृति हमारी संपत्ति भर नहीं, जीवन की सहचरी है। उससे रिश्ता बचाना अपने भविष्य को बचाना है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूना लेख विषय को सजीव आरंभ, क्रमबद्ध विचारों तथा सार्थक समापन के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले आरंभ, मुख्य विचार और समापन मन में तय करें; फिर अंतिम बार शब्द-सीमा तथा विषय से संबंध जाँचें।

4(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मोबाइल में कैद जीवन

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और संवेदना सहज भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। 'मोबाइल में कैद जीवन' विषय तकनीक पर बढ़ती निर्भरता और मानवीय संबंधों पर उसके प्रभाव पर केंद्रित है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक आरंभ, क्रमबद्ध विकास और विचारपूर्ण अंत होना चाहिए। शीर्षक विषय के अनुरूप रखें तथा अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक 'मोबाइल में कैद जीवन' होगा। आरंभ सुबह के परिचित दृश्य से करेंगे, फिर मोबाइल की उपयोगिता स्वीकारते हुए अत्यधिक प्रयोग के प्रभाव बताएँगे। अंत में सीमित उपयोग और वास्तविक संबंधों की ओर लौटने का संदेश देंगे। स्क्रीन, भोजन की मेज और खेल के मैदान जैसे परिचित प्रसंग लेख में दृश्यात्मकता लाते हैं। केवल मोबाइल की बुराइयाँ गिनाने के बजाय उसकी सुविधा और अति प्रयोग के बीच संतुलन दिखाएँ।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख मोबाइल में कैद जीवन

सुबह आँख खुलते ही खिड़की का सूरज नहीं, मोबाइल की स्क्रीन हमारा स्वागत करती है। चाय ठंडी हो जाती है, पर संदेशों की कतार खत्म नहीं होती। भोजन की मेज पर परिवार साथ बैठता है, लेकिन सबकी निगाहें अपनी छोटी दुनिया में उलझी रहती हैं। मोबाइल ने

पढ़ाई, संवाद और जानकारी को आसान बनाया है; फिर भी उसका अनियंत्रित प्रयोग हमें अपनों से दूर कर रहा है। खेल के मैदान सूने हैं और बच्चों की हँसी अब स्क्रीन के पीछे छिप गई है। हर सुंदर पल को जीने से पहले हम उसकी तस्वीर लेना चाहते हैं। आवश्यक है कि मोबाइल के उपयोग का समय तय करें, सूचनाएँ सीमित रखें और प्रतिदिन कुछ समय परिवार, पुस्तकों तथा प्रकृति को दें। जीवन स्क्रीन से कहीं बड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष लेख मोबाइल की उपयोगिता स्वीकारते हुए उस पर अत्यधिक निर्भरता का चित्र प्रस्तुत करता है। इसका संदेश है कि समयबद्ध उपयोग से वास्तविक अनुभवों और मानवीय संबंधों के लिए जगह बचाई जाए।

त्वरित सुझाव: इस विषय में परिचित घरेलू दृश्य से शुरुआत करें और अंत में मोबाइल के उपयोग का व्यावहारिक उपाय दें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उल्लेख कीजिए कि अभिव्यक्ति के अधिकार में लेखन किस प्रकार सहायक है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन लेखक की मौलिक सोच, कल्पना और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को विकसित करता है। इसमें तैयार सामग्री दोहराने के स्थान पर अपने अनुभवों और विचारों को व्यवस्थित किया जाता है।
- प्रश्न के दोनों पक्ष आवश्यक हैं: इस लेखन का अभिप्राय तथा अभिव्यक्ति के अधिकार को व्यवहार में लाने में उसकी भूमिका।

चरण 1: उत्तर का आधार पहले स्पष्ट करेंगे कि अप्रत्याशित विषय पहले से तैयार नहीं होते और उन पर लेखक स्वतंत्र ढंग से सोचता है। फिर लेखन को निजी विचारों, अनुभवों और प्रश्नों को दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम बताएँगे। उत्तर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को जिम्मेदार, तर्कपूर्ण संवाद से जोड़ना उचित है। यहाँ किसी नए विषय की उदाहरणात्मक सूची देना आवश्यक नहीं है; मुख्य ध्यान लेखन की प्रक्रिया और व्यक्ति की स्वतंत्र आवाज पर रहे।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अर्थ ऐसे अनजाने विषयों पर मौलिक ढंग से लिखना है, जिनकी पहले से तैयारी न हो। इसमें लेखक अपने अनुभव, कल्पना और स्वतंत्र चिंतन से विचार विकसित करता है। लेखन व्यक्ति को अपनी अनुभूतियाँ, मान्यताएँ, असहमति और समस्याएँ स्पष्ट रूप में समाज के सामने रखने का अवसर देता है। इससे संकोच घटता है, आत्मविश्वास बढ़ता है और विचारों का आदान-प्रदान होता है। इस प्रकार जिम्मेदारी और तर्क के साथ लिखा गया लेख अभिव्यक्ति के अधिकार को सार्थक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अप्रत्याशित विषयों पर लेखन स्वतंत्र चिंतन का अभ्यास है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात स्पष्ट और जिम्मेदारी से समाज तक पहुँचाकर अभिव्यक्ति के अधिकार का उपयोग करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'अभिप्राय' बताएँ और फिर अपनी बात समाज तक पहुँचाने से अभिव्यक्ति के अधिकार का संबंध स्पष्ट करें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी की कथावस्तु को मंच पर अभिनीत किए जा सकने वाले दृश्यों, संवादों और क्रियाओं में बदला जाता है।
- मूल कथा की केंद्रीय संवेदना बचाए रखते हुए मंच, समय, पात्र और दृश्यबंध की व्यावहारिक सीमाओं का ध्यान रखा जाता है।

चरण 1: रूपांतरण के मुख्य बिंदु चुनना पहले कहानी के मूल कथ्य, प्रमुख घटनाओं, पात्रों और संघर्ष को पहचानें। कहानीकार के वर्णन

तथा पात्रों के मनोभावों को नाटक में केवल पढ़कर नहीं सुनाया जाता; उन्हें उपयुक्त संवाद, व्यवहार, अभिनय और मंचीय संकेतों से प्रकट करना पड़ता है। गैरजरूरी प्रसंग घटाए जा सकते हैं, पर कथा का केंद्रीय आशय बदलना उचित नहीं है।

चरण 2: दृश्यात्मक प्रस्तुति की कसौटी प्रत्येक दृश्य के लिए देखें कि उसमें कौन उपस्थित है, क्या क्रिया होती है और उससे कथा कैसे आगे बढ़ती है। लंबी व्याख्या की जगह उपयुक्त हावभाव या संवाद रखें। स्थान बदलने पर मंचसज्जा की कठिनाई और दृश्य परिवर्तन में लगने वाला समय भी विचारणीय है। इससे रूपांतरण केवल कहानी का संवादों में विभाजन नहीं रह जाता, बल्कि स्वतंत्र मंचीय प्रस्तुति बनता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय मूल कथ्य और केंद्रीय संवेदना सुरक्षित रखनी चाहिए। कथानक को मंचन योग्य दृश्यों में बाँटकर स्थान, समय और मंच की सीमाओं का ध्यान रखना आवश्यक है। पात्रों की संख्या तथा उनके प्रवेश और प्रस्थान की योजना स्पष्ट हो। वर्णनात्मक अंशों और अंतर्द्वंद्व को संवाद, अभिनय तथा क्रियाओं से व्यक्त किया जाए। संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक और पात्रानुकूल हों। संघर्ष, घटनाक्रम और चरमबिंदु प्रभावशाली बनें। प्रकाश, ध्वनि, वेशभूषा तथा मंचसज्जा के संकेत भी स्पष्ट दिए जाएँ।

चरण 4: निष्कर्ष सफल नाट्य रूपांतरण में कहानी की संवेदना मंच पर दृश्य, क्रिया और पात्रानुकूल संवाद के माध्यम से साकार होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मूल संवेदना, दृश्य विभाजन, मंचीय सीमाएँ, पात्रानुकूल संवाद और अभिनय योग्य क्रियाएँ अवश्य जोड़ें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटकों में संवादों पर विशेष ध्यान देना क्यों आवश्यक है ? तर्क सहित लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; इसमें दृश्य, पात्रों की मुद्राएँ और मंचसज्जा दिखाई नहीं देते।
- संवाद, स्वर, ध्वनि प्रभाव और संगीत मिलकर श्रोता की कल्पना में नाटकीय संसार निर्मित करते हैं।

चरण 1: माध्यम की सीमा और संवाद की भूमिका समझना तर्क का आधार रेडियो की श्रव्य प्रकृति है। श्रोता पात्रों का पहनावा, क्रिया या स्थान देख नहीं सकता। इसलिए पात्रों की बातचीत से घटनाओं का क्रम, संबंध और भाव स्पष्ट होने चाहिए। आवाज की लय, विराम और उतार-चढ़ाव पात्र के मनोभाव व्यक्त करते हैं। संवाद बोझिल विवरण की तरह न लगें, बल्कि स्वाभाविक बातचीत में आवश्यक सूचना दें। ध्वनि प्रभाव इस कार्य में सहयोग करते हैं।

चरण 2: प्रभावी संवाद की कसौटी सुनते समय श्रोता पिछली पंक्ति दोबारा पढ़ नहीं सकता, इसलिए जटिल वाक्य या अस्पष्ट संकेत समझ में बाधा बनते हैं। पात्रों की भाषा और बोलने का ढंग अलग होने से उनकी पहचान आसान होती है। केवल ध्वनि प्रभाव घटना का पूरा अर्थ नहीं बता सकते; स्वाभाविक संवाद यह स्पष्ट करते हैं कि घटना पात्रों को कैसे प्रभावित कर रही है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक पूर्णतः श्रव्य होता है; श्रोता पात्रों, दृश्यों और उनकी गतिविधियों को देख नहीं सकता। इसलिए संवाद ही कथानक, परिवेश, पात्रों के संबंध और मनोभावों को स्पष्ट करते हैं। श्रोता इन्हीं के सहारे अपने मन में दृश्य रचता है। संवाद सरल, संक्षिप्त, स्वाभाविक और पात्रानुकूल होने चाहिए, ताकि बात एक बार सुनकर समझ आए। आवाज का उतार-चढ़ाव, विराम और लय भावों तथा तनाव को उभारते हैं। ध्वनि प्रभावों के साथ सार्थक संवाद नाटक को बोधगम्य और प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो में दृश्य का अभाव होने के कारण संवाद कथा के बोध, पात्रों की पहचान और नाटकीय प्रभाव का प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: पहले रेडियो को श्रव्य माध्यम बताइए, फिर संवाद से दृश्य, पात्र और भाव समझ में आने का संबंध स्पष्ट कीजिए।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'आत्मपरिचय' कविता में कवि के व्यवहार में कवि की किन असंगतियों का उल्लेख हुआ है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में कवि का व्यक्तित्व प्रेम, मस्ती और संवेदनशीलता से निर्मित है।
- असंगति का अर्थ व्यवहार में दिखाई देने वाला विरोध है; कवि इन विरोधों के बीच अपने मन की स्वतंत्रता बचाता है।

चरण 1: विरोधी व्यवहार पहचानिए कवि जगजीवन का भार लेकर चलता है, फिर भी जीवन में प्यार लेकर चलता है। वह संसार की ओर पूरी तरह उदासीन दिखाई देता है, पर उसके हृदय में प्रेम और स्नेह भी है। संसार के सुख-दुख का बोझ उसे केवल निराश नहीं करता; उसके भीतर जीवन के प्रति आकर्षण बना रहता है। इस प्रकार भार और प्यार का साथ रहना पहली असंगति है।

चरण 2: विरोध का आशय समझिए कवि जग की परवाह नहीं करता, किंतु जग से उसका संबंध समाप्त नहीं होता। वह संसार के साथ बहने के बजाय अपना अलग राग गाता है। उसका रोदन भी दूसरों को गान जैसा लगता है। ये विरोध उसके स्वतंत्र और भावुक स्वभाव को व्यक्त करते हैं; इन्हें साधारण अस्थिरता या कपट नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कवि जगजीवन का भार उठाते हुए भी प्यार लिए चलता है। वह जग की परवाह नहीं करता, फिर भी स्नेह से जुड़ा है। उसका रोदन गान बन जाता है। ये असंगतियाँ उसके स्वतंत्र, प्रेमपूर्ण और संवेदनशील व्यक्तित्व को व्यक्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले व्यवहार के विरोधी पक्षों का जोड़ा लिखिए, फिर उनके पीछे का प्रेमपूर्ण स्वभाव स्पष्ट कीजिए।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पतंग के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग कवि ने किया है, उन्हें लिखते हुए उसके पीछे के उद्देश्य को भी कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता बालमन के उल्लास और आकाश में उड़ान की आकांक्षा को सामने लाती है।
- विशेषणों का उद्देश्य पतंग की हल्की बनावट के साथ बच्चों की उमंग और कल्पना का विस्तार दिखाना है।

चरण 1: प्रयुक्त विशेषण बताइए कवि पतंगों के लिए सबसे हलकी और रंगीन विशेषणों का प्रयोग करता है। ये केवल सजावट के शब्द नहीं हैं। हलकापन उन्हें हवा के सहारे ऊपर उठने योग्य बनाता है और रंगीनता आकाश में उनकी आकर्षक उपस्थिति दिखाती है। पतंग की ये दोनों विशेषताएँ बच्चों को उसकी उड़ान से भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं।

चरण 2: विशेषणों को कविता के भाव से जोड़िए पतंगों के साथ बच्चों की इच्छाएँ भी ऊपर उठती दिखाई देती हैं। उनका रंग और हलकापन बालसुलभ उत्साह, स्वतंत्रता और निर्भीक कल्पना के अनुकूल है। बच्चे छतों पर दौड़ते हैं और आकाश को अपना खेल का क्षेत्र बना लेते हैं। इसलिए इन विशेषणों का आशय किसी वस्तु का रूप बताने तक सीमित नहीं है; वे पूरे वातावरण की चंचलता और उमंग को मूर्त करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने पतंगों को सबसे हलकी और रंगीन कहा है। इन विशेषणों से उनकी आकाश में सहज उड़ान और आकर्षक रूप उभरते हैं। साथ ही बच्चों की रंगभरी कल्पना, उल्लास, स्वतंत्रता और ऊँचाइयाँ छूने की आकांक्षा भी व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: विशेषण गिनाने के बाद हलकापन को उड़ान से और रंगीनता को बालमन की उमंग से अवश्य जोड़िए।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

क्रांति की गर्जना से शोषक वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव को 'बादल राग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल की गर्जना क्रांति और सामाजिक परिवर्तन की चेतना का प्रतीक है।
- शोषक का भय और किसान की आशा एक ही क्रांतिकारी शक्ति के अलग-अलग प्रभाव हैं।

चरण 1: शोषक की स्थिति स्पष्ट कीजिए शोषक वर्ग संपत्ति और विशेषाधिकारों के सहारे सुख भोगता है। क्रांति की गर्जना सुनते ही उसे अपनी सत्ता और संचित वैभव के नष्ट होने का डर सताता है। कविता में धनियों का भय उनके सुरक्षित भवनों और विलास के बावजूद बना रहता है। उनका बाहरी ऐश्वर्य भीतर के आतंक को मिटा नहीं पाता।

चरण 2: प्रतीक से प्रभाव समझाइए बादल का गर्जन पुरानी शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती देता है। बड़े वृक्षों का हिलना और धनी वर्ग का काँपना इसी संकट को संकेतित करते हैं। जो शक्ति छोटे और पीड़ित लोगों में नई आशा भरती है, वही अत्याचारियों के लिए विनाश की आशंका बनती है। इस विरोध से कवि स्पष्ट करता है कि परिवर्तन का विरोध वे करते हैं जिनका स्वार्थ अन्यायपूर्ण व्यवस्था से जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रांति की गर्जना से शोषक वर्ग भयभीत हो उठता है। उसे अपनी संपत्ति, सत्ता और विलासपूर्ण जीवन के नष्ट होने की आशंका होती है। सुरक्षित भवनों में रहकर भी वह काँपता है, क्योंकि क्रांति उसकी अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देती है।

त्वरित सुझाव: बादल को क्रांति का प्रतीक मानकर लिखिए कि धनियों का भय उनकी सत्ता और संपत्ति खोने की आशंका से जुड़ा है।

7. छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना,

कोई अंधड़ कहीं से आया

क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

कल्पना के रसायनों को पी

बीज गल गया निःशेष;

शब्द के अंकुर फूटे,

पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

झूमने लगे फल,

रस अलौकिक,

अमृत धाराएँ फूटतीं

रोपाई क्षण की,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

[5 अंक]

7(i). 'छोटा मेरा खेत' कविता के मूल भाव के बारे में सही कथन है :

[1 अंक]

- (A) कविता को व्यवसाय के रूप में देखा गया है।
- (B) इसमें श्रव्य बिंब का प्रयोग किया गया है।
- (C) यह ऐसा खेत है जिसके चार कोने हैं।
- (D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

सही उत्तर: (D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में खेती का रूपक कविता की रचना और उसके स्थायी रस को स्पष्ट करता है।
- रोपाई क्षण की और कटाई अनंतता की सृजन के आरंभ और उसके चिरस्थायी प्रभाव में अंतर बताती है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति का अर्थ समझिए कविता किसी क्षण की अनुभूति से जन्म लेती है, पर पाठकों को उसका आनंद बार-बार मिलता है। लुटते रहने पर भी रस का कम न होना सृजन की अक्षयता का प्रमाण है। इसी कारण मूल भाव शाश्वत सृजन कर्म है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचिए (A) में व्यवसाय का उल्लेख है, जबकि अंश में लाभ या बिक्री की चर्चा नहीं है। (B) किसी बिंब की बात करता है, वह पूरी कविता का मूल भाव नहीं है। (C) चौकोने खेत को वास्तविक खेत मानता है, जबकि वह कागज़ के पन्ने का रूपक है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (D) है: यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

त्वरित सुझाव: मूल भाव चुनते समय अंतिम पंक्तियों में व्यक्त अक्षय आनंद को पूरे काव्यांश से जोड़िए।

7(ii). कविता की रचना-प्रक्रिया के संदर्भ में 'अंधड़' क्या है ?

[1 अंक]

- (A) अलंकारों की अधिकता
- (B) भाषा की कठिनता
- (C) भावनाओं का आवेग
- (D) पंक्तियों की अधिकता

सही उत्तर: (C) भावनाओं का आवेग

हल:

अवधारणा:

- अंधड़ रचना को जन्म देने वाले तीव्र भावावेग का प्रतीक है।
- रूपक में प्राकृतिक घटना के माध्यम से कवि के भीतर होने वाली सृजनात्मक हलचल व्यक्त होती है।

चरण 1: प्रसंग से प्रतीक पहचानिए अंधड़ आने पर क्षण का बीज बोया जाता है। फिर कल्पना उसे विकसित करती है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। यह क्रम दिखाता है कि पहले मन में भावनाओं का प्रबल आवेग उठता है, जिससे कविता की प्रेरणा जन्म लेती है।

चरण 2: सभी विकल्पों का परीक्षण कीजिए (A) अलंकारों की अधिकता कहता है, पर यहाँ काव्य-सज्जा की गिनती नहीं है। (B) भाषा की कठिनता बताता है, जिसका अंश में संकेत नहीं है। (D) पंक्तियों की अधिकता केवल रचना के आकार से जुड़ी है। इसलिए भावनाओं का आवेग बताने वाला (C) ही प्रसंगानुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है: भावनाओं का आवेग।

त्वरित सुझाव: अंधड़ के तुरंत बाद बीज बोए जाने का क्रम देखिए; यही प्रेरणा और भावावेग का संकेत है।

7(iii). कवि अपने छोटे खेत में कौन-से बीज बोता है ?

[1 अंक]

- (A) चावल के
- (B) विचारों के
- (C) ईर्ष्या के
- (D) कागज़ के

सही उत्तर: (B) विचारों के

हल:

अवधारणा:

- कागज़ का पन्ना खेत है और उस पर उपजने वाली कविता विचार और अनुभूति का फल है।
- कृषि संबंधी शब्द यहाँ वास्तविक खेती के बजाय काव्य रचना की प्रक्रिया के रूपक हैं।

चरण 1: बीज के विकास का क्रम देखिए क्षण का बीज कल्पना के रसायनों को पीकर गलता है और उससे शब्द के अंकुर फूटते हैं। इसलिए यह बीज मन में उठे विचार अथवा अनुभूति का है। उसका विकसित रूप कविता बनता है, जिससे पाठक को रस मिलता है।

चरण 2: गलत अर्थों को अलग कीजिए (A) चावल के बीज वास्तविक खेती से जुड़े हैं, जबकि खेत कागज़ है। (C) ईर्ष्या के बीज का कोई संकेत काव्यांश में नहीं है। (D) कागज़ खेत का प्रतीक है, बीज का नहीं। विचारों के बीज वाला विकल्प ही शब्दों के अंकुर निकलने को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: विचारों के बीज।

त्वरित सुझाव: रूपक में कागज़ को खेत, विचार को बीज और शब्दों को अंकुर मानकर प्रतीकों का मेल बैठाइए।

7(iv). कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है ?

[1 अंक]

- (A) भवन-निर्माण से
- (B) कृषि-कर्म से
- (C) शिक्षा-दीक्षा से
- (D) व्यवसाय से

सही उत्तर: (B) कृषि-कर्म से

हल:

अवधारणा:

- पूरे काव्यांश में रचना प्रक्रिया और कृषि प्रक्रिया का समानांतर चित्रण है।
- बीज, अंकुर, पल्लव, पुष्प, फल, रोपाई और कटाई एक ही रूपक को क्रमशः विकसित करते हैं।

चरण 1: कृषि संबंधी क्रियाएँ पहचानिए कवि कागज़ को खेत कहता है। उसमें अनुभूति का बीज बोया जाता है, कल्पना उसे पोषण देती है और शब्द अंकुर बनकर निकलते हैं। बाद में पल्लव, पुष्प और फल आते हैं। यह क्रम स्पष्ट रूप से कृषि-कर्म का है।

चरण 2: अन्य तुलनाओं की जाँच कीजिए (A) भवन-निर्माण के लिए आवश्यक नींव, दीवार या निर्माण का क्रम यहाँ नहीं है। (C) शिक्षा-दीक्षा के गुरु और विद्यार्थी का प्रसंग नहीं मिलता। (D) व्यवसाय में क्रय-विक्रय प्रमुख होता है, जबकि यहाँ रस बाँटने पर भी घटता नहीं। इसलिए खेती की तुलना ही पूरे अंश पर लागू होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है: कृषि-कर्म से।

त्वरित सुझाव: एक शब्द पर निर्भर न रहें; बीज से कटाई तक का पूरा क्रम तुलना को निर्णायक बनाता है।

7(v). 'कटाई अनंतता की' का प्रतीकार्थ है :

[1 अंक]

- (A) रोपाई के बाद कटाई
- (B) कटाई कर्म अनंत
- (C) साहित्य कालजयी
- (D) फलों की काट-छाँट

सही उत्तर: (C) साहित्य कालजयी

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेत कागज़ का पन्ना है और बीज सृजन को जन्म देने वाला क्षण है। खेती की शब्दावली के माध्यम से कविता की रचना और उसके आनंद का रूपक सामने आता है।
- प्रतीकार्थ निर्धारित करते समय आसपास की पंक्तियाँ निर्णायक होती हैं। रस की अमृतधाराओं का निरंतर फूटना और लुटने पर भी कम न होना साहित्य के अक्षय आनंद को व्यक्त करता है।

चरण 1: प्रतीक का संदर्भ समझें सामान्य खेती में फसल एक निश्चित समय पर काटी जाती है। यहाँ क्षण में हुई रोपाई के सामने अनंतता की कटाई रखी गई है। इसका आशय है कि किसी छोटे अनुभव से जन्मी रचना का रस पाठकों को बहुत लंबे समय तक मिलता रहता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (C) साहित्य कालजयी इस स्थायी प्रभाव को व्यक्त करता है। (A) केवल खेती का क्रम बताता है; (B) कटाई कर्म को ही अनंत कहकर रूपक का अर्थ नहीं खोलता; (D) फलों की वास्तविक काट-छाँट तक सीमित है। कविता में भौतिक फल की जगह काव्यरस प्रधान है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) साहित्य कालजयी है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ चुनते समय उसके साथ आई अमृतधारा और अक्षय रस की छवियों को जोड़कर पढ़ें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

फूलों के खिलने से कविता का क्या संबंध है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में फूल का खिलना कविता के सृजन और सौंदर्य का बिंब है। दोनों आनंद देते हैं, किंतु कविता की संवेदना प्रकृति की भौतिक सीमाओं से आगे जाती है।
- तुलना का आधार केवल समानता नहीं, अंतर भी है। फूल की सुगंध और जीवन का क्षेत्र सीमित है, जबकि कविता स्मृति और अर्थ के सहारे पाठकों में लंबे समय तक जीवित रहती है।

चरण 1: समानता और अंतर पहचानें फूल अपने खिलने से वातावरण को सुंदर बनाता है। इसी प्रकार कविता अपने भावों और कल्पना से मनुष्य के मन में सौंदर्य तथा आनंद जगाती है। फिर भी कवि की दृष्टि कविता को फूल की प्रतिकृति नहीं बनाती। कविता मनुष्य की अनुभूतियों का व्यापक संसार रचती है। पाठक उसके शब्दों से अपनी अनुभूतियाँ जोड़कर नया अर्थ ग्रहण करता है। इसीलिए कविता का खिलना किसी एक मौसम पर निर्भर नहीं है; उसका प्रभाव अलग-अलग समय और स्थान के पाठकों तक पहुँचता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूलों का खिलना कविता के सृजन, सौंदर्य और आनंद का प्रतीक है। जैसे फूल खिलकर वातावरण को महकाते हैं, वैसे कविता संवेदना और कल्पना से मानव-मन को समृद्ध करती है। किंतु फूलों का जीवन तथा सुगंध सीमित होते हैं। कविता की महक समय और स्थान की सीमाएँ पार करती है; उसका प्रभाव फूल के मुरझाने की तरह समाप्त नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष फूल और कविता दोनों आनंद देते हैं; कविता का प्रभाव फूल के सीमित जीवन से आगे तक बना रहता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले खिलने की समानता और फिर कविता की असीम महक का अंतर अवश्य लिखें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“ ‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता हर ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करती है, जो दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है।” कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता संवेदनहीन संचार-माध्यमों पर व्यंग्य करती है। वह दिखाती है कि किसी पीड़ित व्यक्ति का दुख किस तरह प्रदर्शन और व्यावसायिक लाभ का साधन बनाया जा सकता है।
- कविता में साक्षात्कारकर्ता के प्रश्नों और कैमरे के व्यवहार से आलोचना स्पष्ट होती है। सहायता के स्थान पर अपंग व्यक्ति की पीड़ा को उभारने और दर्शकों को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।

चरण 1: कविता के प्रसंग का अर्थ समझें कार्यक्रम में अपंग व्यक्ति के प्रति अपनापन दिखाने के बजाय उससे असुविधाजनक प्रश्न पूछे जाते हैं। उसका दुख उभरवाकर उसे कैमरे में पकड़ने की इच्छा प्रमुख रहती है। दर्शकों की करुणा भी कार्यक्रम के प्रभाव की सामग्री बन जाती है। इसलिए कविता केवल एक व्यक्ति को नहीं, दूसरे की यातना से अपना उद्देश्य साधने वाली प्रवृत्ति को निशाना बनाती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में साक्षात्कारकर्ता अपंग व्यक्ति की सहायता के बजाय उसकी पीड़ा को कैमरे पर उभारना चाहता है। वह कठोर प्रश्नों से उसे रुलाकर दर्शकों को भावुक करना और कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना चाहता है। यहाँ दुख सहानुभूति का विषय नहीं, प्रदर्शन की वस्तु बन जाता है। इसीलिए कविता उन सभी पर व्यंग्य करती है जो दूसरों की वेदना से लाभ कमाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कविता दूसरों की पीड़ा को सहानुभूति के बजाय प्रदर्शन और लाभ का साधन बनाने वाली मानसिकता का विरोध करती है।

त्वरित सुझाव: सामान्य मीडिया-आलोचना लिखने के बजाय कठोर प्रश्न, आँसू और प्रदर्शन को कविता के प्रमाण बनाएँ।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कवितावली’ में तुलसीदास ने अपने समाज की किन सामाजिक बुराइयों का उल्लेख किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली तत्कालीन समाज में आजीविका के संकट और जातिगत संकीर्णता को उजागर करती है। व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से व्यापक सामाजिक अव्यवस्था सामने आती है।
- उत्तर में कविता में उल्लिखित किसान, व्यापारी और सेवक की दशा तथा जाति-पाँति के भेद को जोड़ना चाहिए। गरीबी को केवल व्यक्तिगत अभाव कहना उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि की उपेक्षा करना होगा।

चरण 1: सामाजिक बुराइयों का आधार पहचानें किसान के पास खेती और भिखारी के पास भीख न होने का उल्लेख रोज़गार तथा जीवन-निर्वाह के संकट को दिखाता है। पेट की विवशता मनुष्य को अनुचित कर्मों और संतान बेचने तक धकेलती है। दूसरी ओर कवि को जाति के आधार पर तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति ऊँच-नीच और सामाजिक संकीर्णता का प्रमाण है। इन उदाहरणों से आर्थिक और सामाजिक अन्याय दोनों स्पष्ट होते हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी और आजीविका के संकट का उल्लेख किया है। किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक सभी जीविका के साधनों से वंचित हैं। पेट की आग मनुष्य को अनुचित कर्म तथा संतान बेचने तक विवश करती है। उन्होंने जाति-पाँति, ऊँच-नीच, सामाजिक भेदभाव और संकीर्णता पर भी प्रहार किया है। इस प्रकार कविता समाज की आर्थिक तथा सामाजिक दुर्दशा दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवितावली में आजीविका का संकट, भूख, गरीबी तथा जातिगत ऊँच-नीच और भेदभाव प्रमुख सामाजिक बुराइयाँ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो सूत्रों में व्यवस्थित करें : जीविका का संकट और जाति-पाँति का भेदभाव।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

भक्तिन की जीवन-स्थितियाँ उस समय के ग्रामीण समाज की किस वास्तविकता को प्रकट करती हैं ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के जीवन का विश्लेषण स्त्री की सामाजिक स्थिति, आर्थिक शोषण और पारिवारिक भेदभाव को जोड़कर करना चाहिए।
- पाठ की घटनाएँ प्रमाण हैं; सामान्य सामाजिक टिप्पणी के साथ उनका उल्लेख उत्तर को ठोस बनाता है।

चरण 1: प्रसंग और सामाजिक वास्तविकता पहचानें भक्तिन को पुत्र के स्थान पर पुत्रियाँ होने के कारण ससुराल में उपेक्षा और भेदभाव सहना पड़ा। इससे पता चलता है कि परिवार में स्त्री का सम्मान उसकी योग्यता से अधिक पुत्र पैदा करने से जोड़ा जाता था। पति की मृत्यु के बाद संपत्ति और खेती पर अधिकार पाने की पारिवारिक चेष्टाएँ विधवा की असुरक्षा दिखाती हैं। पंचायत का निर्णय स्त्री की इच्छा का सम्मान करने के स्थान पर पुरुष की बात को मान्यता देता है। इससे न्याय देने वाली सामाजिक संस्था का पक्षपात भी सामने आता है। उत्तर में भक्तिन की मेहनत और आत्मसम्मान के साथ उस व्यवस्था को देखना चाहिए जो उसके संघर्ष को कठिन बनाती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भक्तिन की जीवन-स्थितियाँ ग्रामीण समाज की पितृसत्तात्मक और शोषणकारी व्यवस्था उजागर करती हैं। बेटियाँ जन्मने पर उसे उपेक्षा मिली; विधवा होने पर परिवार उसकी संपत्ति हड़पना चाहता था। उसकी बेटी के मामले में पंचायत ने भी अन्यायपूर्ण निर्णय दिया। लगान न चुका पाने पर जमींदार ने उसे अपमानित किया। इस प्रकार स्त्री-भेदभाव, विधवा की असुरक्षा और आर्थिक शोषण स्पष्ट होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का जीवन ग्रामीण समाज में स्त्री-विरोध, अन्यायपूर्ण पंचायत और जमींदारी शोषण का प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पुत्री-जन्म पर भेदभाव, विधवा की संपत्ति और जमींदार का व्यवहार जैसे ठोस प्रसंग जोड़िए।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘काले मेघा पानी दे’ पाठ के आधार पर बारिश न होने से उत्पन्न संकटों को स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में वर्षा का संबंध केवल मौसम से नहीं, खेती, पेयजल और पूरे ग्रामीण जीवन से है।
- संकट बताते समय प्राकृतिक परिवर्तन और उनसे उपजी मानवीय कठिनाइयों को क्रम से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: संकटों का कारण और प्रभाव समझें वर्षा न होने से जल के स्रोत सूखने लगते हैं और धरती की नमी समाप्त हो जाती है। खेती वर्षा पर निर्भर होने के कारण फसल का भविष्य संकट में पड़ता है। पानी की कमी मनुष्यों के साथ पशुओं को भी प्रभावित करती है। पाठ में लोगों की वर्षा के लिए व्याकुल प्रतीक्षा और इंदर सेना की गतिविधियाँ इसी सामूहिक संकट की पृष्ठभूमि में आती हैं। इस अभाव का सबसे गंभीर पक्ष यह है कि गाँव की खेती और घरेलू आवश्यकताएँ दोनों एक ही वर्षा पर निर्भर हैं। केवल गर्मी का उल्लेख पर्याप्त नहीं; पानी की उपलब्धता, भोजन के उत्पादन और पशुओं के जीवन के बीच संबंध बताना आवश्यक है। इंदर सेना की पुकार वर्षा की इसी सामूहिक आवश्यकता को व्यक्त करती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बारिश न होने से भीषण गर्मी और सूखे का संकट उत्पन्न हो गया था। धरती तप रही थी, कुओं का पानी घट रहा था और पानी जुटाना कठिन हो गया था। खेतों की बुआई तथा फसलों पर संकट था। मनुष्य और पशु-पक्षी प्यास से व्याकुल थे। वर्षा पर निर्भर ग्रामीण जीवन में आजीविका और अन्न की चिंता बढ़ गई थी।

चरण 3: निष्कर्ष अनावृष्टि ने जल, खेती और आजीविका को संकट में डालकर समूचे ग्रामीण जीवन को व्याकुल कर दिया।

त्वरित सुझाव: वर्षा की कमी से जलाभाव, फिर खेती और अंत में जनजीवन पर प्रभाव का क्रम बनाकर उत्तर लिखिए।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘समता’ का आशय स्पष्ट करते हुए ‘मेरी कल्पना का आदर्श समाज’ पाठ के आधार पर लिखिए कि राजनीतिज्ञ के संदर्भ में समता को पाठ में कैसे स्पष्ट किया गया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समता का आशय अवसर और व्यवहार की समानता है; लोगों की प्रत्येक स्वाभाविक विशेषता का समान होना नहीं।
- आंबेडकर राजनीतिज्ञ की व्यावहारिक सीमा बताकर सबके साथ समान व्यवहार के सिद्धांत को उचित ठहराते हैं।

चरण 1: समता और व्यक्तिगत भिन्नता का संबंध समझें मनुष्य शारीरिक वंशपरंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और अपने प्रयत्नों के कारण अलग होते हैं। इन भिन्नताओं को स्वीकार करने पर भी जन्म या सामाजिक परिस्थितियों के कारण किसी को आगे बढ़ने के अवसरों से वंचित करना उचित नहीं। समता एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत है जो सभी की क्षमताओं के विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराता है। यहाँ समान व्यवहार का आधार प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं की पूरी जाँच कर लेना नहीं है। विशाल समाज में ऐसी व्यक्तिगत जाँच संभव नहीं होती। इसलिए सार्वजनिक व्यवहार में किसी को पहले से कम योग्य या कम अधिकार वाला मानने के बजाय समानता का सामान्य नियम अपनाया जाता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर समता का आशय सभी को समान व्यवहार और विकास के समान अवसर देना है। मनुष्यों की क्षमताएँ भिन्न हैं, किंतु राजनीतिज्ञ के पास इतने लोगों का मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त समय और जानकारी नहीं होती कि वह प्रत्येक की आवश्यकतानुसार अलग व्यवहार करे। इसलिए व्यावहारिक दृष्टि से उसे सबको समान मानकर व्यवहार करना चाहिए। यही समता का उचित आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष राजनीतिज्ञ की सीमाओं के कारण सबके साथ समान व्यवहार समता का व्यावहारिक और आवश्यक सिद्धांत बनता है।

त्वरित सुझाव: समता को सबकी क्षमताएँ एक जैसी होने का दावा न लिखें; राजनीतिज्ञ के समय और जानकारी की सीमा स्पष्ट करें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन में अंतर ‘जाति प्रथा और श्रम विभाजन’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन कामों की व्यवस्था है, जबकि जाति-प्रथा जन्म के आधार पर काम करने वालों का स्थायी वर्गीकरण करती है।
- अंतर स्पष्ट करने के लिए योग्यता, चुनाव की स्वतंत्रता और ऊँच-नीच की स्थिति की तुलना करनी चाहिए।

चरण 1: दोनों व्यवस्थाओं का आधार पहचानें सामान्य श्रम-विभाजन में समाज की आवश्यकता और व्यक्ति की दक्षता के अनुसार काम बाँटे जा सकते हैं। जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि या क्षमता को निर्णायक नहीं मानती; वह जन्म से व्यवसाय निश्चित करती है। इसलिए यह केवल काम की व्यवस्था नहीं, श्रमिकों को असमान सामाजिक स्तरों में बाँटने वाली व्यवस्था बन जाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन में कार्यों का बाँटवारा योग्यता और आवश्यकता के अनुसार होता है। जाति-प्रथा में श्रमिकों का विभाजन जन्म के आधार पर होता है। इसमें ऊँच-नीच जुड़ी है और व्यक्ति को रुचि तथा क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने या बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष श्रम-विभाजन काम बाँटता है; जाति-आधारित श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को जन्मगत और असमान श्रेणियों में बाँधता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में काम बनाम काम करने वाला, योग्यता बनाम जन्म और स्वतंत्रता बनाम बंधन के बिंदु अवश्य रखें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘शिरीष के फूल’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने शिरीष के फूलों के माध्यम से जीवन के किस सत्य को उजागर किया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की कोमलता और भीषण गर्मी में उसका खिलना विपरीत परिस्थितियों में जीवन की अजेयता का प्रतीक है।
- पाठ का संदेश बाहरी कठोरता के बीच भी सरसता, मस्ती और अनासक्ति बनाए रखना है।

चरण 1: प्रतीक और जीवन-सत्य का संबंध शिरीष के फूल देखने में अत्यंत कोमल हैं, फिर भी वे प्रचंड गर्मी और लू में खिलते रहते हैं। लेखक इस विरोध के माध्यम से बताता है कि जीवन की वास्तविक शक्ति परिस्थितियों से हार मानने में नहीं, उनके बीच सहज आनंद और सृजन बनाए रखने में है। बाहरी कठिनाई को अपने भीतर की कठोरता बना लेना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक ने शिरीष के फूलों से यह सत्य उजागर किया है कि विषम परिस्थितियों में भी जीवन की सरसता और जिजीविषा बनी रह सकती है। भीषण गर्मी में खिलता शिरीष अनासक्त रहकर मस्ती, कोमलता और सृजनशीलता बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष विपत्ति के बीच अडिग जिजीविषा और सहज सरसता बनाए रखने का जीवन-सत्य प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गर्मी में खिलने के तथ्य को अनासक्ति और जिजीविषा से जोड़ें; केवल फूल की सुंदरता न लिखें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पहलवान की ढोलक मृतप्राय गाँव वालों के लिए कैसे जीवनदायिनी थी ? ‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के संदर्भ में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी और भय के वातावरण में ढोलक का स्वर ग्रामीणों का मनोबल जगाता है।
- जीवनदायिनी का आशय यहाँ मानसिक संबल और संघर्ष की प्रेरणा है, रोग का चिकित्सकीय उपचार नहीं।

चरण 1: कथा का प्रसंग समझिए गाँव में महामारी, मृत्यु और सन्नाटे से लोग निराश तथा भयभीत हैं। ऐसे समय में लुट्टन पहलवान की ढोलक का स्वर उन्हें अकेलेपन और मृत्यु के आतंक से क्षणिक मुक्ति देता है। पहलवान के संघर्ष से जुड़ी उसकी लय ग्रामीणों में भी विपत्ति का सामना करने का साहस पैदा करती है। इस प्रकार कला सामूहिक जीवन को मानसिक सहारा देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से त्रस्त गाँव में पहलवान की ढोलक का स्वर मृत्यु के भय और सन्नाटे को तोड़ता था। उसकी लय मृतप्राय ग्रामीणों में साहस, आशा तथा संघर्ष की प्रेरणा जगाती थी। वह निराश लोगों को मानसिक संबल देकर जीने की शक्ति प्रदान करती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक भयभीत ग्रामीणों का मनोबल जगाकर और जीवन-संघर्ष की प्रेरणा देकर जीवनदायिनी बनती थी।

त्वरित सुझाव: जीवनदायिनी का अर्थ साहस और मानसिक सहारा समझाएँ; ढोलक से बीमारी ठीक होने का दावा न करें।

11. मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि वह मन बंद रहना चाहिए। जो बंद हो जाएगा, वह शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और अगर 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बंद हो जाएगा ? सच्चा ज्ञान सदा अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। [5 अंक]

11(i). गद्यांश के अनुसार 'आँख फोड़ना' का अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) शारीरिक विकलांगता को बढ़ावा देना
- (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना
- (C) दृष्टि को स्थायी रूप से खो देना
- (D) तपस्या का सबसे उच्च स्थान प्राप्त करना

सही उत्तर: (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में रूपक का अर्थ उसके पहले और बाद के तर्क से निर्धारित होता है।
- लेखक लोभ को दबाने के लिए इंद्रिय का विनाश करने की निरर्थकता बताता है।

चरण 1: प्रसंग का संकेत लेखक पूछता है कि आँख फोड़ लेने से लोभनीय वस्तु का दर्शन भले टले, पर क्या लोभ मिट जाएगा? इससे स्पष्ट है कि आँख फोड़ना लोभ के अवसर से बचने के लिए देखने के साधन को नष्ट करने का रूपक है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) इसी आशय को व्यक्त करता है। (A) शारीरिक विकलांगता के प्रचार की बात करता है, जो लेखक का उद्देश्य नहीं है। (C) केवल शब्द का शाब्दिक अर्थ है। (D) गलत है क्योंकि लेखक ऐसे नकारात्मक तप को अस्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ चुनते समय आँख के शाब्दिक अर्थ की जगह लोभ के बारे में लेखक का तर्क देखें।

11(ii). लेखक के अनुसार 'मन को बंद कर देना' क्यों सही नहीं है ?

[1 अंक]

- (A) इससे मन प्रतिष्ठित रूप से शांत हो जाता है।
- (B) इससे लोभ का नाश हो जाता है।
- (C) इससे मन जड़ हो जाता है।
- (D) इससे मन सपने देखना बंद कर देता है।

सही उत्तर: (C) इससे मन जड़ हो जाता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश मन की सक्रियता और विवेक को आवश्यक मानता है।
- मन का बंद होना इच्छाओं पर विजय नहीं, जड़ता का लक्षण है।

चरण 1: निर्णायक वाक्य पहचानिए लेखक स्पष्ट कहता है कि मन को बंद कर रखना जड़ता है। उसका तर्क है कि अपूर्ण मनुष्य की सभी इच्छाएँ समाप्त नहीं हो सकतीं; उन्हें केवल नकार देने से लोभ का समाधान नहीं होता।

चरण 2: सभी विकल्पों का मूल्यांकन (C) सीधे लेखक के कथन से मेल खाता है। (A) मन की शांति का दावा करता है, जबकि लेखक

जड़ता बताता है। (B) गलत है क्योंकि ऐसे निषेध को लोभ की जीत कहा गया है। (D) सपने बंद होने की बात गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: इससे मन जड़ हो जाता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्द मन को बंद करने के साथ गद्यांश में आए जड़ता शब्द को जोड़कर उत्तर चुनें।

11(iii). गद्यांश के अनुसार 'सच्चा ज्ञान' किस प्रकार की भावना से प्राप्त हो सकता है ?

[1 अंक]

- (A) पूर्णता की भावना से
- (B) अपूर्णता के बोध से
- (C) पूर्णता के नाश से
- (D) मनमानी छूट से

सही उत्तर: (B) अपूर्णता के बोध से

हल:

अवधारणा:

- सच्चा ज्ञान अपने अधूरेपन के प्रति सजग बनाता है।
- गद्यांश में अपूर्णता की स्वीकृति सच्चे कर्म का भी आधार है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण अंतिम वाक्यों में लेखक कहता है कि सच्चा ज्ञान अपूर्णता के बोध को गहरा करता है। इसलिए ज्ञान के साथ पूर्ण हो जाने का अहंकार नहीं, अपने अधूरेपन की पहचान जुड़ी है।

चरण 2: अन्य विकल्प अलग कीजिए (B) गद्यांश के अपूर्णता के बोध का सीधा रूप है। (A) पूर्णता की भावना इसका उलटा है। (C) पूर्णता के नाश की बात करता है, जिसका कथन में आधार नहीं है। (D) मनमानी छूट विवेकपूर्ण स्वीकृति का अर्थ नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: अपूर्णता के बोध से।

त्वरित सुझाव: अंतिम दो वाक्यों में ज्ञान और कर्म दोनों के साथ अपूर्णता का संबंध पहचानें।

11(iv). गद्यांश के अनुसार लोभ से बचने का क्या उपाय है ?

[1 अंक]

- (A) मन को बंद रखना
- (B) मन को भरा रखना
- (C) मन को संयमित रखना
- (D) मन की इच्छा पूरी करना

सही उत्तर: (B) मन को भरा रखना

हल:

अवधारणा:

- लेखक मन खाली न रखने और मन बंद न करने में भेद करता है।
- यहाँ मन को भरा रखना सार्थक चेतना और विचार बनाए रखना है, हर इच्छा को पूरा करना नहीं।

चरण 1: आरंभिक कथन से उत्तर निकालिए गद्यांश की शुरुआत मन खाली नहीं रहना चाहिए से होती है। लेखक साथ ही चेताता है कि इसका अर्थ मन बंद करना नहीं है। इसलिए लोभ से बचाव के संदर्भ में मन को भरा रखने का आशय उसे सजग और सार्थक विचारों से युक्त रखना है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर (B) आरंभिक निर्देश का सकारात्मक रूप है। (A) गलत है क्योंकि मन बंद रखना जड़ता बताया गया है। (C) संयम सामान्यतः उचित गुण है, पर इस प्रश्न में मन खाली न रखने के स्पष्ट निर्देश को (B) अधिक सीधे व्यक्त करता है। (D) हर इच्छा पूरी करना लोभ से मुक्ति नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: मन को भरा रखना।

त्वरित सुझाव: मन खाली न रहे और मन बंद न हो, इन दोनों निर्देशों को साथ पढ़कर विकल्प चुनें।

11(v). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. लोभ का नकार ही लोभ की जड़ है और यह व्यक्ति की हार है।

II. लोभ को दबाना ही उसे जीतना है।

III. संयमित मन ही लोभ पर विजय पा सकता है।

इन कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ?

[1 अंक]

(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।

(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।

(C) कथन I और III सही हैं।

(D) कथन II और III सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन I और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- कथनों का मूल्यांकन लेखक के निषेध और संयम के अंतर के आधार पर करना है।
- लोभ का केवल दमन उसकी वास्तविक विजय नहीं है; सजग मन उसकी पकड़ को समझता है।

चरण 1: कथन I और II का परीक्षण कथन I में लोभ के नकार को व्यक्ति की हार कहा गया है। इसे गद्यांश में मन के भीतर केवल नकार स्थापित करने के संदर्भ में पढ़ना चाहिए; लेखक इसे लोभ की जीत और आदमी की हार कहता है। अतः I का आशय स्वीकार्य है। कथन II गलत है क्योंकि लोभ दबाने को लेखक उसकी जीत नहीं मानता।

चरण 2: कथन III और संयुक्त विकल्प कथन III में संयमित मन की बात है। यहाँ संयम का अर्थ मन को जड़ कर देना नहीं, अपनी अपूर्णता स्वीकारते हुए विवेकपूर्ण सक्रियता रखना है। इसलिए III सही है। (A) में सही III छूटता है; (B) और (D) गलत कथन II को सही बताते हैं। (C) सही दोनों कथन समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: कथन I और III सही हैं।

त्वरित सुझाव: कथन I में नकार को मन के निषेध के अर्थ में पढ़ें और कथन II के दमन को वास्तविक संयम से अलग रखें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी में आधुनिक पारिवारिक मूल्यों के विघटन की यथार्थ प्रस्तुति है।” इस कथन के आधार पर वर्तमान प्रसंगों में विघटित हो रहे मूल्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें बचाने के उपाय लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू और उनकी संतान के विचारों का अंतर बदलते पारिवारिक संबंधों को सामने लाता है।

- उत्तर में कहानी का प्रसंग, वर्तमान जीवन में मूल्यों का क्षरण और उन्हें बचाने के व्यावहारिक उपाय जोड़ने चाहिए।

चरण 1: कथन का आधार समझें यशोधर बाबू की सादगी, अपनापन और पुराने परिचितों के प्रति लगाव नई पीढ़ी की उपभोगप्रिय जीवनशैली से मेल नहीं खाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगांठ का उत्सव भी उनके भीतर सहज प्रसन्नता के स्थान पर अजनबीपन जगाता है। बेटे का दिया ड्रेसिंग गाउन उन्हें उस व्यक्तिगत देखभाल का विकल्प नहीं लगता जिसकी उन्हें परिवार से अपेक्षा है। प्रसंग का आशय प्रत्येक नई सुविधा का विरोध करना नहीं, संबंधों में आत्मीयता के घटने को पहचानना है।

चरण 2: वर्तमान संदर्भ और बचाव के उपाय चुनें आज व्यस्तता, दिखावा और वस्तुओं के आधार पर सफलता का मूल्यांकन परिवार के साझा समय को कम कर सकते हैं। बड़ों के अनुभव की उपेक्षा तथा युवाओं की आकांक्षाओं के प्रति असहिष्णुता, दोनों पीढ़ियों की दूरी बढ़ाते हैं। समाधान केवल युवाओं को दोष देना नहीं है। परिवार में नियमित बातचीत, साथ बैठना, एक-दूसरे की बात सुनना और आवश्यकताओं का ध्यान रखना जरूरी है। इन्हीं बिंदुओं को लगभग 100 शब्दों के उत्तर में संतुलित रूप से रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी के बीच बढ़ती दूरी पारिवारिक मूल्यों के विघटन को उजागर करती है। वर्षगांठ का भव्य आयोजन भी उनकी भावनात्मक अकेलेपन की अनुभूति दूर नहीं करता। बेटे का ड्रेसिंग गाउन देना वस्तु से अधिक आत्मीय देखभाल की उनकी अपेक्षा सामने लाता है। आज भी उपभोक्तावाद, व्यस्तता और दिखावे के कारण बुजुर्गों का सम्मान, संवाद, सादगी तथा पारस्परिक सहयोग कमजोर पड़ रहे हैं। इन्हें बचाने के लिए परिवार को साझा समय निकालना, बुजुर्गों के अनुभव सुनना और व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। पुरानी पीढ़ी भी युवाओं के विचार समझे। संवेदनशील संवाद और परस्पर सम्मान ही संबंधों को जीवंत बनाएँगे।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी का संदेश है कि पारिवारिक आत्मीयता को नियमित संवाद, संवेदनशील देखभाल और दोनों पीढ़ियों के पारस्परिक सम्मान से बचाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: कहानी का एक ठोस प्रसंग लिखकर उससे वर्तमान समस्या और उसका व्यावहारिक समाधान जोड़ें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“कवि भी अपने जैसा ही एक हाड़-माँस का; क्रोध-लोभ का मनुष्य ही होता है।” ‘जूझ’ कहानी के लेखक को यह अहसास कब हुआ और इस अहसास का क्या परिणाम निकला ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक का कवि के प्रति दृष्टिकोण सौंदलगेकर मास्टर के सजीव काव्य शिक्षण और व्यक्तिगत परिचय से बदलता है।
- उत्तर में अहसास का अवसर तथा उससे जन्मी आत्मविश्वास और स्वतंत्र कविता रचना की प्रेरणा स्पष्ट करनी है।

चरण 1: अहसास का प्रसंग पहचानें सौंदलगेकर मास्टर कविता को लय, अभिनय और तन्मयता के साथ पढ़ाते थे। वे स्वयं कविता रचते थे और अपने परिचित कवियों की बातें भी सुनाते थे। लेखक ने उनकी कविताएँ सुनीं और उनके साधारण मानवीय जीवन को निकट से देखा। इससे कवि के किसी असाधारण अथवा पहुँच से बाहर प्राणी होने की धारणा टूटने लगी। प्रश्न के कथन में क्रोध और लोभ का उल्लेख इसी सामान्य मनुष्यता को रेखांकित करता है; इसका अर्थ कवि के नैतिक अवमूल्यन से नहीं है।

चरण 2: अहसास का परिणाम समझें जब लेखक को लगा कि कवि भी उसकी तरह सामान्य मनुष्य है, तो कविता बनाना असंभव काम नहीं रहा। मास्टर की प्रेरणा और प्रोत्साहन से उसकी झिझक घटी तथा अपनी अनुभूतियों को शब्द देने का साहस जागा। खेत में काम करते समय आसपास की प्रकृति और अनुभव कविता की सामग्री बनने लगे। वह कविताएँ गुनगुनाने तथा स्वयं नई पंक्तियाँ बनाने लगा। इस प्रकार केवल दूसरों की रचनाएँ सुनने का आनंद अपनी रचना करने की सक्रिय आकांक्षा में बदल गया।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर ‘जूझ’ के लेखक को यह अहसास सौंदलगेकर मास्टर के संपर्क में आने पर हुआ। मास्टर कविताएँ बड़े भाव और लय से पढ़ाते, अपनी रचनाएँ सुनाते तथा परिचित कवियों की चर्चा करते थे। उनका सामान्य मानवीय जीवन देखकर लेखक समझा कि कवि कोई अलौकिक प्राणी नहीं, उसके जैसा मनुष्य है। इस समझ ने कविता रचने की उसकी झिझक दूर की और आत्मविश्वास जगाया। उसे लगा कि वह भी अपने अनुभवों को कविता में व्यक्त कर सकता है। वह खेतों में काम करते हुए कविताएँ गुनगुनाने और अपनी पंक्तियाँ बनाने लगा। मास्टर के प्रोत्साहन ने उसकी रचनात्मक रुचि को और विकसित किया।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदर्यकेर मास्टर के संपर्क से कवि की सामान्य मनुष्यता का बोध हुआ और लेखक स्वयं कविता रचने की ओर प्रेरित हुआ।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो स्पष्ट हिस्सों में रखें: मास्टर के संपर्क में हुआ बोध और उससे शुरू हुई स्वतंत्र काव्य रचना।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ में लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को ‘अनुशासित’ क्यों कहा है ? सिंधु घाटी सभ्यता की संस्कृति व सामाजिक संरचना का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत ‘अतीत में दबे पाँव’ में मोहनजोदड़ो के पुरावशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता की संस्कृति और सामुदायिक जीवन का परिचय मिलता है।
- यहाँ अनुशासन का अर्थ सुव्यवस्थित नगर-जीवन, सार्वजनिक सुविधाओं की देखभाल और निजी प्रदर्शन के स्थान पर सामाजिक हित को महत्त्व देना है।

चरण 1: नगर-व्यवस्था से अनुशासन समझिए सड़कों और गलियों की सुनियोजित बनावट, घरों की सुव्यवस्था, नालियों का जाल तथा जल-निकासी की पद्धति बताती है कि वहाँ निर्माण मनमाने ढंग से नहीं होता था। कुएँ, स्नानागार और स्वच्छता से जुड़ी सुविधाएँ सामुदायिक आवश्यकताओं के प्रति सजगता दिखाती हैं। इतनी विकसित नागरिक व्यवस्था के लिए साझा नियमों का पालन और लोगों का सहयोग आवश्यक था। इसलिए लेखक के कथन को केवल व्यक्तिगत संयम तक सीमित न करके समूचे नगर के सुव्यवस्थित जीवन से जोड़ना चाहिए।

चरण 2: संस्कृति और सामाजिक संरचना का संबंध स्पष्ट कीजिए विशाल राजमहलों, भव्य मंदिरों या शासकीय वैभव के प्रदर्शन की अपेक्षा सामान्य लोगों के जीवनोपयोगी निर्माण अधिक महत्त्वपूर्ण दिखाई देते हैं। कला-कौशल और सुरुचि जीवन में उपस्थित हैं, किंतु उनमें आडंबर की प्रधानता नहीं है। इससे समाज-पोषित संस्कृति तथा सामुदायिक हित का संकेत मिलता है। इसका अर्थ यह दावा करना नहीं है कि समाज में कोई भेद था ही नहीं; पाठ का बल इस बात पर है कि उपलब्ध अवशेषों में राजसत्ता या धर्मसत्ता का आतंक और प्रभुत्व मुखर नहीं है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को ‘अनुशासित’ कहा है, क्योंकि उसके नगरों की योजना सुव्यवस्थित थी। सड़कें, गलियाँ, मकान, कुएँ और ढकी नालियाँ नागरिक सुविधा तथा स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाते हैं। सार्वजनिक स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था सामूहिक जीवन के नियमों एवं सहयोग का प्रमाण हैं। वहाँ विशाल राजमहलों और भव्य मंदिरों के बजाय सामान्य लोगों की सुविधाओं पर ध्यान दिखाई देता है। कला में सुरुचि है, किंतु अनावश्यक आडंबर नहीं। सामाजिक संरचना में सामुदायिक हित का महत्त्व था। इस प्रकार यह संस्कृति राजसत्ता या धर्मसत्ता के वैभव से अधिक समाज-पोषित और संयमित जीवन का परिचय देती है।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता का अनुशासन उसकी सुविचारित नगर-योजना, स्वच्छता, सामुदायिक सहयोग और प्रदर्शनरहित, समाज-पोषित संस्कृति में प्रकट होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना का एक प्रमाण और समाज-पोषित संस्कृति का एक प्रमाण देकर दोनों को सामुदायिक अनुशासन से जोड़िए।